3 सच्चे शिष्य बनने के गुण

लेख

प्रस्तावना — एक सच्चा शिष्य वही होता है, जिसमें एकाग्रता, एकनिष्ठता, स्वच्छ व पवित्र सकारात्मक विचार व जिज्ञासा के गुण होते हैं।

प्रतिबिंब — इस पाठ में लेखक यह कहना चाहते हैं कि शिष्य को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी कार्य को करने या किसी को कुछ सिखाने से पहले आज्ञाकारी तथा सीखने की क्षमता रखनी चाहिए।

परिकल्पना — शिष्य के मन में एक पवित्र भाव व जिज्ञासा का भाव तथा सत्य तक पहुँचने की प्रबल इच्छा होना आवश्यक है।

धार्मिक होने के लिए तन, मन और वचन की शुद्धता नितान्त आवश्यक है। अपवित्र आत्मा कभी यथार्थ धार्मिक नहीं हो सकती। अत: शिष्य में पवित्रता, सच्ची ज्ञान-पिपासा और अध्यवसाय होना आवश्यक है। सच्ची ज्ञान-पिपासा के संबंध में एक सनातन सत्य है कि "जाकर जापर सत्य स्नेह, सो तेहि मिलहि न कछु संदेह' – हम जो चाहते हैं, वही पाते हैं। जिस वस्तु की अंत:करण से चाह नहीं करते वह हमें प्राप्त नहीं होती।

सच्ची व्याकुलता होनी बड़ी कठिन बात है। उसके लिए तो हमें अपनी पाशविक प्रकृति के साथ निरंतर जूझते रहना होगा, सतत् युद्ध करना होगा और उसे अपने वश में लाने के लिए अविराम संघर्ष करना होगा।' कब तक ? जब तक हमारे लिए हृदय में सच्ची व्याकुलता उत्पन्न न हो जाए, जब तक विजयश्री हमारे हाथ न लग जाए। जो शिष्य इस प्रकार अध्यवसाय के साथ साधना में प्रवृत्त होता है, उसे सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

पहली शर्त यह है कि जो शिष्य सत्य को जानना चाहता है, उसको इस लोक अथवा परलोक में कुछ प्राप्त करने की सारी इच्छाओं को त्यागना होगा। जो हम देखते हैं वह सत्य नहीं है। जो हम देखते हैं, वह उस समय तक सत्य नहीं है, जब तक हमारे मन में इच्छाएँ आती रहती हैं। जब कि हृदय में संसार के लिए तनिक भी इच्छा है, सत्य का उदय नहीं होगा। बहुत धनी लोग सत्य को गरीबों की अपेक्षा कम समझ पाते हैं। धनी मनुष्य के पास अपनी सम्पत्ति और शक्ति अपनी सुविधा और विलासिता के अतिरिक्त और किसी वस्तु के विषय में सोचने का समय ही नहीं होता। जो मनुष्य कभी रोता नहीं, मैं उस पर विश्वास नहीं करता, उसके हृदय के स्थान पर कठोर चट्टान का एक बड़ा टुकड़ा होता है।

प्रेम, सत्य तथा निःस्वार्थता नैतिकता संबंधी आलंकारिक वर्णन मात्र नहीं है वरन् शक्ति की महान् अभिव्यक्ति होने के कारण ये हमारे सर्वोच्च आदर्श हैं। अन्य सब बहिर्मुखी कर्मों की अपेक्षा यह आत्मनिग्रह शक्ति की कहीं बड़ी अभिव्यक्ति है। अत: निःस्वार्थता अधिक फलदायी होती है, केवल स्वास्थ्य की दृष्टि से भी यह अधिक लाभदायक है। मन की सारी बहिर्मुखी गति किसी स्वार्थपूर्ण उद्देश्य की ओर दौड़ती रहने से छिन्न-भिन्न होकर बिखर जाती है, वह फिर तुम्हारे पास शक्ति लौटाकर नहीं लाती परंतु यदि उसका संयम किया जाए तो उससे शक्ति की वृद्धि होती है।

दूसरी शर्त यह है कि शिष्य अपनी ज्ञानेन्द्रियों को नियंत्रित करने में समर्थ होना चाहिए। ये सब इन्द्रियाँ, अंत: और बाह्य नियन्त्रण में होनी चाहिए। कठिन अभ्यास के द्वारा उसे उसी अवस्था में पहुँच जाना चाहिए, जहाँ वह

Scanned by CamScanner

अपने मन द्वारा इन्द्रियों का, प्रकृति के आदेशों का सफल विरोध कर सके। वह अपने मन से यह कह सके, "तुम मेरे हो मैं तुम्हें कुछ न देखने की अथवा न सुनने की आज्ञा देता हूँ।" और मन अधिकार से मुक्त हो चुका होता है, उससे अलग हो चुका होता है।

इसके बाद मन को शांत करना चाहिए। वह इधर-उधर भटकता रहता है। जब मैं ध्यान लगाने बैठता हूँ, तो मन में संसार के सब बुरे से बुरे विषय उभर आते हैं। मितली आने लगती है। मन ऐसे विचारों को क्यों सोचता है। जब तक मन चंचल है और वश में बाहर है, तब तक कोई अध्यात्मिक ज्ञान संभव नहीं है। शिष्य को **मनोनिग्रह** सीखना है।

तीसरी शर्त यह है कि शिष्य की सहनशक्ति भी महान् होनी चाहिए। हम देखते हैं कि जब सब बातें ठीक-ठाक से चलती रहती हैं, तो मन ठीक प्रकार से व्यवहार करता है। पर जब कोई बात बिगड़ जाती है, तो हमारा मन संतुलन खो देता है। यह ठीक नहीं है। सारी बुराई और दुःख को कष्ट की एक आह के बिना, दुख के विरोध के निराकरण के और प्रतिशोध के एक विचार के बिना सहन करो। यह सच्ची सहनशक्ति है। शिष्य को अगली शर्त जो पूरी करनी है, उसमें मुक्त होने की आशंका अत्यन्त तीव्र हो।

इस शरीर की ये वासनाएँ केवल क्षण भर के लिए संतोष देती है और अनन्त दुख लाती हैं। यह उस प्याले को पीने के समान है, जिसकी ऊपरी सतह तो अमृत है पर उसके नीचे **हलाहल** भरा हुआ है। पर फिर भी हम इन सब वस्तुओं के पीछे पागल हैं। इस क्लेश से निकलने का केवल एक **मार्ग** है सब इन्द्रियों पर नियंत्रण और वासनाओं का परित्याग। यदि तुम आध्यात्मिक बनना चाहते हो, तो तुमको त्याग करना होगा।

ये वे शर्तें हैं, जिन्हें शिष्य बनने की इच्छा रखने वाले को पूरा करना होगा। इसको पूरा किये बिना वह सच्चे गुरु के सम्पर्क में आने का अधिकारी नहीं बनेगा और यदि सौभाग्यवश वह उसके सम्पर्क में आ भी जाता है, तो गुरु द्वारा संचारित शक्ति से उसे **स्फुरण** नहीं प्राप्त होगा। इन शर्तों से कोई समझौता नहीं हो सकता। इन सब शर्तों के, इन सब तैयारियों के पूर्ण होने पर ही शिष्य के हृदय में कमल खिलेगा और भ्रमर आएगा। तब शिष्य को ज्ञान होगा कि गुरु उसके शरीर में, उसके भीतर था। वह खिलता है, वह अनुभूति पाता है, वह जीवन के सागर को पार करता है, वह इस भयावह सागर को पार करता है और दयावश बिना लाभ अथवा स्तुति का विचार लिए दूसरों को इसे पार करने में सहायता देता है।

अतः गुरु के साथ हमारा संबंध ठीक वैसा ही है जैसा पूर्वज के साथ उसके वंशज का। गुरु के प्रति श्रद्धा, नम्रता, विनय और आदर के बिना हममें धर्म-भाव पनप ही नहीं सकता। यह एक महत्त्वपूर्ण बात है कि जिन देशों में गुरु और शिष्य में इस प्रकार का संबंध विद्यमान है, केवल वहाँ असाधारण आध्यात्मिक पुरुष उत्पन्न हुए हैं, और जिन देशों में इस प्रकार के गुरु शिष्य-संबंध की उपेक्षा हुई है, वहाँ धर्मगुरु एक वक्ता मात्र रह गया है – गुरु को मतलब रहता है अपनी 'दक्षिणा' से और शिष्य को मतलब रहता है गुरु के शब्दों से, जिन्हें वह अपने मस्तिष्क में ठूँस लेना चाहता है। यह हो गया कि बस दोनों अपना-अपना रास्ता नापते हैं।

महा वीर हनुमान के चरित्र को ही तुम्हें इस समय आदर्श मानना पड़ेगा। देखो न, वे राम की आज्ञा से समुद्र लांघकर चले गये – जीवन मृत्यु की परवाह कहाँ ? महा जितेन्द्रिय, महाबुद्धिमान, दास्य भाव के उस महान् आदर्श से तुम्हें अपना जीवन गठित करना होगा। ऐसा करने पर दूसरे भावों का विकास स्वयं ही हो जाएगा। 'दुविधा छोड़कर गुरु की आज्ञा का पालन और ब्रह्मचर्य की रक्षा' यही है सफलता का रहस्य । "नान्थ-पन्था विद्यतेऽयनाय" **अवलंबन** करने योग्य और दूसरा पथ नहीं। एक ओर हनुमान जी जैसा सेवा-भाव और दूसरी ओर उसी प्रकार लोक को भयभीत कर देने वाले सिंह जैसे विक्रम राम के हित के लिए उन्होंने जीवन तक विसर्जन कर देने में कभी जरा भी संकोच नहीं किया। राम की सेवा के अतिरिक्त अन्य सभी विषयों के प्रति उपेक्षा, यहाँ तक कि बृहत्व, शिवत्व प्राप्ति के प्रति उपेक्षा। केवल रघुनाथ के उपदेश का पालन ही जीवन का एकमात्र व्रत – उसी प्रकार एकनिष्ठ होना चाहिए।

शिक्षण संकेत – कक्षा में बच्चों को बताइए कि गुरु-शिष्य का संबंध आकाश में उड़ रही पतंग और उसके धागे की तरह है। शिष्य जो पतंग है जिसे सब देखते हैं और धागा वह अदृश्य गुरु है जो शिष्य को उच्च स्तर तक पहुँचाता है।

Scanned by CamScanner

पढ़ो और लिखो – पवित्रता, ज्ञान-पिपासा, अध्यवसाय, अन्तःकरण, निरंतर, व्याकुलता, निःस्वार्थता, आध्यात्मिक, महाजितेन्द्रिय, ब्रह्मचर्य।

शब्दार्थ :– **यथार्थ** – सच्चा, सही (right), **पाशविक** – पशु की प्रवृति (animal nature/savage), **अध्यवसाय** – उत्साह (excitement), **प्रवत्त** – लीन (engaged), **निःस्वार्थता** – बिना स्वार्थ के (selflessness), **नैतिकता** – सदाचार (morality), **बहिर्मुखी** – बहुत चीजों का ज्ञान (extrovert), **मनोनिग्रह** – मन का आग्रह (desire), **हलाहल** – विष (poision), **मार्ग** – रास्ता (way), **स्फुरण** – ऊर्जा (energy), **अवलंबन** – निर्भरता (support).

वर्तनी वैभिन्य – संदेह – सन्देह, सिद्धि – सिद्धि, परंतु – परन्तु, संबंध – सम्बन्ध, द्वारा – द्वारा।

अभ्यास-प्रश्न

रचनात्मक मूल्यांकन

क सोचो और बताओ–

1. सच्ची व्याकुलता से क्या तात्पर्य है ?
2. सत्य को जानने के लिए क्या त्यागना होगा ?
3. शिष्य की सहनशक्ति कैसी होनी चाहिए ?
4. मन जब इधर-उधर भटकता है तब क्या होता है ?

संकलित मूल्यांकन

ख दीर्घ उत्तरीय प्रश्न–

1. एक आदर्श शिष्य के क्या गुण होने चाहिए?
2. गुरु और शिष्य का संबंध कैसा होना चाहिए ?
3. सफलता का रहस्य क्या है ?
4. शिष्य को ज्ञान प्राप्त करने के लिए क्या-क्या शर्तें हैं ?
5. हनुमान जी जैसा सेवाभाव रखने से क्या प्राप्त होता है ?

बहु विकल्पीय प्रश्न

ग सही उत्तर पर (✓) का चिह्न लगाइए –

1. शिष्य के लिए आवश्यक है –
   (अ) पवित्रता (ब) तीनों (स) अध्यवसाय (द) सच्ची ज्ञान-पिपासा
2. सच्ची व्याकुलता होना –
   (अ) कठिन है (ब) सरल है (स) सामान्य (द) इनमें से कोई नहीं
3. शिष्य के द्वारा अपने मन को, करना चाहिए –
   (अ) अधीर (ब) शांत (स) भटकाना (द) इनमें से कोई नहीं
4. किसके चरित्र को आदर्श मानना पड़ेगा –
   (अ) हनुमान जी (ब) श्री राम (स) श्री विष्णु (द) शिवशंकर
5. शिष्य की पहली शर्त क्या है –
   (अ) सत्य को जानना (ब) इन्द्रियों को नियन्त्रित करना
   (स) महान् सहन शक्ति (द) शांत मन का होना

Scanned by CamScanner

पाठ 3

सच्चे शिष्य बनने के गुण

प्रश्न / उत्तर

(क)

उ०1 सच्ची व्याकुलता का अर्थ है कि हमें अपनी पाशविक प्रवृत्ति के साथ निरंतर जूझते रहना, सतत् युद्ध करना और उसे वश में लाने के लिए अविराम संघर्ष करते रहना।

उ०2 सत्य को जानने के लिए इस लोक व परलोक में सुख प्राप्त करने की सारी इच्छाओं को त्यागना होगा।

उ०3 शिष्य की सहनशक्ति महान होनी चाहिए। सारी बुराई और दुःख को कष्ट की एक आह बिना, दुख के विरोध के निराकरण और प्रतिशोध के विचार के बिना सहन करना सच्ची सहनशक्ति है।

उ०4 मन जब इधर-उधर भटकने लगता है तब संसार के सब बुरे से बुरे विषय उभर आते हैं। मितली आने लगती है

(ख) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न -

उ०1 एक आदर्श शिष्य में एकाग्रता, एकनिष्ठता, स्वच्छ व पवित्र सकारात्मक विचार व जिज्ञासा के गुण होने चाहिए शिष्य को हमेशा इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी कार्य को करने या किसी को कुछ सीखने से पहले आज्ञाकारी व सीखने की क्षमता रखने वाला होना चाहिए शिष्य के मन में एक पवित्र भाव व जिज्ञासा का भाव तथा सत्य तक पहुंचने की प्रबल इच्छा होनी चाहिए।

Scanned by CamScanner

उ०2 गुरू और शिष्य का संबंध उसीप्रकार होना चाहिए जिसप्रकार पूर्वज के साथ उसके वंशज का होता है। गुरू के प्रति श्रद्धा, नम्रता, विनम्र और आदर का भाव शिष्य में होना चाहिए।

उ०3 गुरू के प्रति श्रद्धा, नम्रता, विनम्र और आदर का भाव रखना। तथा दुविधा छोड़कर गुरू की आज्ञा का पालन और ब्रह्मचर्य की रक्षा करना ही सफलता का रहस्य है।

उ०4 शिष्य को ज्ञान प्राप्त करने के लिए निम्न शर्तें हैं-
पहली शर्त: जो शिष्य सत्य को जानना चाहता है उसको इस लोक व परलोक से कुछ प्राप्त करने की इच्छाओं को त्यागना होगा।
दूसरी शर्त: शिष्य को अपनी ज्ञानेन्द्रियों को नियंत्रित करने में समर्थ होना चाहिए।
तीसरी शर्त: शिष्य की सहनशक्ति महान होनी चाहिए।

उ०5 हनुमान जी जैसे महा जितेन्द्रिय, महाबुद्धिमान, दास्य भाव जैसे महान आदर्श से ही शिष्य को अपना जीवन गठित करना होगा। ऐसा करने पर दूसरे भावों का विकास स्वयं ही हो जाता है और यही सफलता का रहस्य भी है।

Teacher's Signature

Scanned by CamScanner